हिन्दी साहित्य के वैश्विक कथाकार : निर्मल वर्मा

रज्जन प्रसाद शुक्ला
केन्द्रीय विद्यालय मालदा
मलिहा, मालदा पश्चिम बंगाल – 732102
ईमेल – rpshukla000@gmail.com संपर्क सूत्र – 9936444618

'जिस लेखक में तुम्हारी आस्था है, वो अपने मरने के बाद तुम्हे जीने के लिए कुछ ऐसी ही जिंदगी सौंप कर जाता है। अगर वो लेखक निर्मल वर्मा हो, तो फिर ठीक यही जिंदगी तुम्हारी जिंदगी में बची रह जाती है जीने के लिए'

सारांश: निर्मल वर्मा हिंदी साहित्य के एक प्रमुख कथाकार हैं, जिन्होंने भारतीय और वैश्विक साहित्य के बीच सेतु का काम किया। उनके लेखन में भारतीय परंपराओं और पश्चिमी आधुनिकता का संतुलन दिखता है। वे अपने साहित्य में मानव-मन की गहराई, अस्तित्व के सवालों, और सामाजिक जटिलताओं को बड़ी संवेदनशीलता से प्रस्तुत करते हैं। उनकी रचनाएँ मानवीय संवेदनाओं और आधुनिक जीवन की उलझनों को उजागर करती हैं। उनके लेखन में अस्तित्ववाद और आत्मान्वेषण का गहरा प्रभाव दिखता है।

निर्मल वर्मा ने भारतीय साहित्य को वैश्विक पहचान दी। उनके अनुवादों ने चेक और यूरोपीय साहित्य को हिंदी पाठकों तक पहुँचाया। उनका साहित्य पाठकों को जीवन और अस्तित्व के गहरे प्रश्नों पर सोचने के लिए प्रेरित करता है। निर्मल वर्मा हिंदी साहित्य के ऐसे कथाकार हैं, जिन्होंने इसे वैश्विक परिप्रेक्ष्य में स्थापित किया।

मुख्य शब्द : वैश्विक परिप्रेक्ष्य, आधुनिकता, अस्तित्ववाद, आत्म-संघर्ष, समन्वय, संवेदनात्मक, अवसाद, हताशा, पराजय बोध, अस्तित्व, अकेलेपन, अलगाव, उदासी, पाश्चात्य।

प्रस्तावना : निर्मल वर्मा को हिंदी साहित्य में वैश्विक कथाकार के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपने साहित्य में न केवल भारतीय समाज की जटिलताओं और जीवन के यथार्थ को उकेरा, बल्कि विश्व साहित्य में आधुनिकता, अस्तित्ववाद और मानव-मन की गहराइयों को भी शामिल किया। उनके लेखन में भारतीय परंपराओं और पश्चिमी आधुनिकता का संतुलित समन्वय देखने को मिलता है, जिससे उनका साहित्य एक विशिष्ट वैश्विक पहचान बनाता है।

निर्मल वर्मा ने कहानियों, उपन्यासों और निबंधों के माध्यम से हिंदी साहित्य को एक नया आयाम दिया। उनकी कहानियाँ मानवीय संवेदनाओं और अस्तित्व के सवालों को गहराई से प्रस्तुत करती हैं। उनका लेखन सरल, लेकिन बेहद प्रभावशाली है। उनके उपन्यासों में मानव-मन की जटिलताओं, आत्म-संघर्ष, और आधुनिक जीवन की उलझनों का चित्रण देखने को मिलता है।

नई कहानी आंदोलन के एक मजबूत स्तंभ निर्मल वर्मा एक सधे साहित्यकार होने के साथ-साथ एक मूर्धन्य पत्रकार, एक कुशल अनुवादक, एक सफल अध्यापक और एक उच्च कोटि के दार्शनिक भी थे। निर्मल वर्मा ने हिंदी साहित्य की पारम्परिक शैली से अलग यथार्थवाद के साथ-साथ अस्तित्ववाद को केंद्र में रखकर अपनी तमाम रचनाएं रची। इनका साहित्य हमें स्वयं से साक्षात्कार कराता हैं। इनकी लेखनी प्रचलित धारणाओं और मान्यताओं से इतर आधुनिक परिवेश में जी रहे इंसान की बेचैनी को नुमायां करती हैं। खामोशी और एकाकीपन निर्मल वर्मा के साहित्य की विशेषता हैं। उन्होंने अपनी कहानियों के किरदार के ज़रिये भीड़ में जी रहे इंसान के अकेलेपन में उपजे अंतर्मन का बहुत खूबसूरती से मनोविश्लेषण किया हैं। साथ ही रोमांस को विषय बनाकर इंसान के एकाकीपन को भी बड़े ही काव्यात्मक ढंग से पेश किया है। उन्होंने अपनी स्मृतियों को आधार बनाते बीते हुए दिन, गुजरे हुए लोग, अपने द्वारा की हुई यात्राओं पर भरपूर लिखा है। अपने लेखन में पहाड़, किताब और बचपन का जिक्र भी जगह-जगह किया है। वह छोटे से छोटे ब्यौरों को भी बड़े कलात्मक ढंग से पेश करते थे।

कथा-साहित्य निर्मल वर्मा ने अज्ञेय की गद्य परम्परा को समृद्ध किया है। वे हिन्दी के उन विरले रचनाकारों में गिने जाते हैं, जिन्होंने अपने निबन्धों, डायरी, पत्रों और यात्रा संस्मरणों के मार्फत एक अद्भुत, आत्मीय और जादुई संसार रचा। अपने लेखन में उन्होंने न केवल मनुष्य के आपसी सम्बन्धों की चीर–फाड़ की, वरन् उसकी सामाजिक, राजनैतिक भूमिका क्या हो, तेजी से बदलते जाते हमारे आधुनिक समय में एक प्राचीन संस्कृति के वाहक के रूप में उसके आदर्श की पीठिका क्या हो, इन सब प्रश्नों का भी सामना किया। उनकी कथा–कहानियों में जैसा खुलापन और वैश्विकता है, वैसा ही डायरी–निबन्धों में शुद्ध भारतीय जीवन दर्शन है। वे इतिहास, स्मृति और आकांक्षा के अनन्य सर्जक रहे हैं। बकौल प्रभाकर श्रोत्रिय 'अपने विचार–गद्य में निर्मल ने भारतीय स्मृति, उसके मानस और ऐसे अभ्यन्तर को समझने की चेष्टा की जिसमें किसी सम्प्रदाय की गन्ध नहीं, बल्कि एक प्रेरक संस्कृति की निरन्तर खोज है, जिसे काल और वहशी आक्रमणों की धुंध ने ढक लिया या क्षत कर दिया है।' आकस्मिक नहीं कि हमारे समय के कथित दो ध्रुवान्तों के दो लेखक मुक्तिबोध और निर्मल वर्मा अंधेरे के शिल्पी रहे। अंधेरे के भीतर ही शायद उन्हें अपनी–अपनी तरह से शोध करना था, जो वक्त की हवाओं में परत–दर–परत जमा था।

निर्मल वर्मा हिन्दी साहित्य दौर के एक प्रमुख लेखक को हिन्दी साहित्य में नई कहानी के प्रथम अन्वेषक के रूप में देखा जाता है। और हिन्दी साहित्य के मशहूर विश्लेषक 'डॉक्टर नामवर सिंह' ने निर्मल वर्मा जी की कहानी 'परिंदे' को हिन्दी साहित्य की पहली नई कहानी मानते हैं। निर्मल वर्मा ही वो पहले लेखक थे जिन्होंने कहानियों का केंद्र सामाजिक स्थितियों से मानसिक स्थितियों की ओर बदला। उनकी कहानियां अक्सर गहराई और संवेदनशीलता के लिए भी जानी जाती है। हिन्दी साहित्य में नई कहानी आंदोलन के प्रमुख ध्वजवाहक निर्मल वर्मा का कहानी में आधुनिकता का बोध लाने वाले कहानीकारों में अग्रणी स्थान है। निर्मल वर्मा भारतीय मनीषा की उस उज्ज्वल परम्परा के प्रतीक-पुरुष हैं, जिनके जीवन में कर्म, चिन्तन और आस्था के बीच कोई फाँक नहीं रह जाती। कला का मर्म जीवन का सत्य बन जाता है और आस्था की चुनौती जीवन की कसौटी। ऐसा मनीषी अपने होने की कीमत देता भी है और माँगता भी। अपने जीवनकाल में गलत समझे जाना उसकी नियति है और उससे बेदाग उबर आना उसका पुरस्कार। निर्मल वर्मा के हिस्से में भी ये दोनों बखूब आये। स्वतन्त्र भारत की आरम्भिक आधी से अधिक सदी निर्मल वर्मा की लेखकीय उपस्थिति से गरिमांकित रही।निर्मल वर्मा हिन्दी के एक ख्यातिनाम कथाकार और पत्रकार रहे हैं। परिंदे से प्रसिद्धि पाने वाले निर्मल वर्मा की कहानियां अभिव्यक्ति और शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ समझी जाती हैं। 'परिंदे' को हिंदी साहित्य का प्रस्थान बिंदु माना जाता हैं।

निर्मल वर्मा की संवेदनात्मक लेखनी पर हिमाचल की पहाड़ी छायाएं दूर तक पहचानी जा सकती हैं। हिन्दी कहानी में आधुनिक-बोध लाने वाले कहानीकारों में निर्मल वर्मा का स्थान अग्रणी है। अन्य साहित्यकारों की तुलना में उन्होंने कम लिखा है परंतु जितना लिखा है उतने से ही वे बहुत ख्याति पाने में सफल हुए हैं। उन्होंने "कहानी की प्रचलित कला में तो संशोधन किया ही, प्रत्यक्ष यथार्थ को भेदकर उसके भीतर पहुंचने का भी प्रयत्न किया है।"

परिंदे में लतिका अपने बीते दिनों की दुखद स्मृतियों को भूलना चाहती हैं, लेकिन इस भूलने की प्रक्रिया में वह उन्हीं चीजों को याद करती है जिसे वह भूलना चाहती हैं। लतिका की दोहरी मनोस्थिति के माध्यम से उन्होंने मानव मन का बखूबी मनोविश्लेषण किया है। उन्होंने पूरब और पश्चिम की संस्कृति के अंतर्द्वंद पर अपने साहित्य में गहन विचार भी किया है। इनकी कहानियां जीवन की अनिश्चिता और निरर्थकता के साथ-साथ जीवन के यथार्थ बोध का भी परिचय कराती है।

निर्मल वर्मा की संवेदनात्मक बुनावट पर हिमांचल की पहाड़ी छायाएं दूर तक पहचानी जा सकती हैं। उन्होंने कम लिखा है परंतु जितना लिखा है उतने से ही वे बहुत ख्याति पाने में सफल हुए हैं। उन्होंने कहानी की प्रचलित कला में तो संशोधन किया ही, प्रत्यक्ष यथार्थ को भेदकर उसके भीतर पहुंचने का भी प्रयत्न किया है। हिन्दी के महान साहित्यकारों में से अज्ञेय और निर्मल वर्मा जैसे कुछ ही साहित्यकार ऐसे रहे हैं जिन्होंने अपने प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर भारतीय और पश्चिम की संस्कृतियों के अंतर्द्वन्द्व पर गहनता एवं व्यापकता से विचार किया है।

निर्मल वर्मा को पढ़ना ऐसे है मानो आपने उन्हें अपनी उंगली थमा दी है, जिसे पकड़कर वह आपको संवेदनाओं की सुदूर, गहराती दुनिया में लिए चले जा रहे हैं, न तो उंगली छुड़ा पाना आसान, न भाग कर लौट पाना, लेकिन कौन अज्ञानी होगा जो उनकी लेखनी के दर्द और सुख के खूबसूरत मायाजाल से बाहर निकलना चाहेगा, उंगली झटककर लौटना चाहेगा!

हिन्दी-कहानी में आधुनिक-बोध लाने वाले कहानीकारों में निर्मल वर्मा का अग्रणी-स्थान है। उन्होंने कम लिखा है परंतु जितना लिखा है उतने से ही वे बहुत ख्याति पाने में सफल हुए हैं। उन्होंने कहानी की प्रचलित कला में तो संशोधन किये ही, प्रत्यक्ष यथार्थ को भेदकर उसके भीतर पहुँचने का भी प्रयत्न किया है। अपनी इन कहानियों को चुनने से पहले मैंने दुबारा पढ़ा था। पढ़ते समय मुझे बार-बार एक अंग्रेज़ी लेख की बात याद आती रही, 'अर्से बाद अपनी पुरानी कहानियाँ पढ़ते हुए गहरा आश्चर्य होता है कि मैंने ही उन्हें कभी लिखा था। बार-बार यह भ्रम होता है कि मैं किसी अजनबी लेखक की कहानियाँ पढ़ रहा हूँ जिसे मैं पहले कभी जानता था। साथ-साथ एक अजीब किस्म का सुखद विस्मय भी होता है कि ये कहानियाँ एक ज़माने में उस व्यक्ति ने लिखी थीं, जो आज मैं हूँ।' उनकी कहानियों में पीढ़ा, यातना, उदासी, अकेलापन, एकांत, त्रासदी, इंतजार, ये सभी शब्द बिखरे पड़े रहते हैं। उनके लिखने में एक लय है, उदासी भरी लय। जिन को पढ़ने से एक अलग किस्म की गहराई और सुकूनका एहसास होता है। उनकी कहानियां पढ़ने से ऐसा लगता है, कि हम खुद से ही बात कर रहे हो। जैसे कि हम कही नीचे दब गए थे और शायद हम उस बात को भूल भी गए थे पर, उन्हें पढ़के लगता है कि हम खुद को ही हाथ पकड़ कर नीचे से ऊपर उठा रहे हो। उनकी कहानियों को पढ़ने से अपने मन में उतरने का और अंतर मन में टटोलने का मौका मिलता है। निर्मल वर्मा जी ने अकेलेपन, अलगाव और उदासी की भावना को कहानी का अहम हिस्सा बना दिया। उनके किरदार अक्सर उदासी और अकेलेपन में डूबे रहते है, इसीलिए उन्हें अकेलेपन का कवि भी बताया जाता है - निर्मल वर्मा "द पोएट ऑफ लॉनलीनेस"।निर्मल वर्मा की कहानियाँ उस शहरी मध्यवर्गीय व्यक्ति को अपना विषय बनाती हैं जो बहुत कुछ आत्मकेंद्रित है। वह समाज से असम्बद्ध होने के साथ ही मानसिक रूप से असहज है। पाश्चात्य जीवन शैली के शहरी मध्यवर्गीय व्यक्तियों के बिगड़ते और बदलते संबंधों को इनकी कहानियों में उकेरा गया है। इनमें एक खास तरह का अवसाद, हताशा, पराजय बोध, अस्तित्व का संकट और उदासी के बादल छाए रहते हैं। एक तरह से अतीत की उदास स्मृतियों के सहारे निर्मल की कहानियाँ अपना सफर तय करती हैं। निर्मल वर्मा अपनी कहानियों में आधुनिक युग की यांत्रिकता और जड़ता के फलस्वरूप टूटते परिवेश और पारिवारिक अनमनेपन के बीच व्यक्ति के अकेलेपन और अजनबीपन को बहुत शिद्दत के साथ दर्शाने वाले रचनाकार हैं। भीड़ के हाहाकार में शमशानी सन्नाटों का एक पूरा संसार निर्मल की कहानियों में नजर आता है। 'धूप का एक टुकड़ा' भीड़ में अकेलेपन की इसी विडंबना का एक बयान है।

उनकी कहानियां पढ़कर हमे यह भी एहसास होता है कि, हर व्यक्ती किसी न किसी से दुखी हैं, हम सबके अपने - अपने दुख है और कोई भी दुख छोटा नहीं होता। इसीलिए हम सबको एक दुसरे के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए।

निर्मल वर्मा जी के लेखन की एक ख़ास बात ये भी है कि, उनके किरदार कभी भी बनावटी नहीं लगते। उनमें एक गहराई होती हैं। वह अक्सर खयालों में डूबे रहते हैं, और खामोश रहते है। गहरे और विचारशील मोनोलॉग उनकी कहानियों की विशेषता है। उन्हें पढ़कर आप एक खास किस्म का ठहराव और सुकून का अनुभव करेंगे। और ख़ामोशी का इतना बेहतरीन उपयोग हिन्दी साहित्य में और कही देखने को नहीं मिलेगा। उनके लेखन की एक ओर खास बात यह है कि उनके किरदारों के नाम नहीं होते। निर्मल वर्मा ने कम लिखा है, जटिल भी लिखा है, परंतु जितना लिखा है उससे ही वे बहुत ख्याति पाये हैं। उन्होंने कहानी की प्रचलित कला में तो संशोधन किया ही, प्रत्यक्ष यथार्थ को भेदकर उसके भीतर पहुंचने का भी प्रयत्न किया है।

किसी भी भाषा में काव्य का वैभव आसानी से स्वीकार किया जाता है लेकिन निर्मल वर्मा अकेले ऐसे साहित्यकार है जिन्होंने ने हिन्दी साहित्य में गद्य का वैभव स्थापित किया है| वर्मा ने अपनी भाषा का निर्माण किया जिसने अपनी संवेदनशीलता, गीतात्मक संवेदनशीलता और बारीकियों के कारण अपनी अलग पहचान बनाई। वे ऐसे ही लेखकों में रहे हैं, जिनके गद्य का जादू आज भी बोलता है।

निर्मल वर्मा अपने रचना कर्म में सृजनात्मकता और बौद्धिक अर्न्तयात्राओं तथा उसके रचनागत सरोकारों और उद्देश्यों का, उसकी लेखकीय आस्थाओं और प्रतिबद्धताओं का प्रामाणिक दस्तावेज प्रस्तुत करते चलते हैं। वे उन गिने–चुने भारतीय लेखकों में से एक हैं, जिनका लेखन भारतीय परम्परा के निराकरण का पर्याय बन चुका है। चीजों और स्थितियों को खोलने वाली, उनकी चीर-फाड करनेवाली पारदर्शीत वृत्ति उनकी रचनाओं को अलग मुकाम पर खड़ा कर देती है। निर्मल वर्मा का साहित्य स्मृति और कल्पना को अनुभवों के बारीक रेशे से बाँधकर ऐसा माया लोक गढ़ता है, जिसमें एक धीर और लम्बी प्रतीक्षा, उदासी और विस्मय, मृत्यु और भय की लगातार उपस्थिति तथा निरन्तर नष्ट हो रहे मनुष्य की मानसिक विश्रान्ति को एक बड़ा अभिप्राय हासिल होता है।उनकी कहानियों को आज के समय इसीलिए भी ज़रूरी है, क्योंकि आज जो लोग अपने घरों से इतने दूर रह रहे हैं, अपने प्रिय जनों से दूर है, या कई बार साथ रहने पर भी अक्सर लोग खुद को अकेला पाते है, उन्हें ये कहानियां पढ़कर लगता है के अकेलेपन का यह जो भाव है यह सामान्य है। और उनकी कहानियों को

पढ़कर वह न सिर्फ अकेलेपन को अपनाते है बल्कि, उसके लिए सहज भी बनते हैं।हिन्दी साहित्य को पहली बार कोई ऐसा लेखक मिला जो भीड़ में छुपे उस अकेलेपन की आवाज़ बना जो बरसों से अनसुनी थी। लेखक का नाम था निर्मल वर्मा। अकेलेपन के कथाकार के रूप में पहचाने जाने वाले, वर्मा जी के लेखन भ्रम की एक जाल की तरह लगते हैं जो अकेलेपन और उदासी की भावनाओं से हमारा सामना कुछ यूँ करवाते हैं जैसे कि वह हमारे लिए लिख रहे थे। लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि उनकी रचनाओं में एक अजीब सा आनंद छिपा है, जिसकी गवाही वर्मा जी को पढ़ने वाले सभी लोगों देते है जिन्होंने इसे महसूस किया है। उनके कार्यों में स्वयं से बात करने वाले पात्रों द्वारा लंबे मोनोलॉग शामिल हैं। लेकिन इस एकांत और अकेलेपन में उनके लेखन की सुंदरता है जो हमें एकांत से प्यार करने पर मजबूर कर देती है। उनकी लेखन शैली न केवल अद्भुत और अविश्वसनीय थी बल्कि पूरी तरह से नई भी थी।

निर्मल वर्मा की कहानियां अतीतजीवी हैं। अतीत उनकी कहानी की वह एकमात्र शरणगाह है जहां पहुंचकर उनकी आत्मा शरण ही नहीं शान्ति भी पाती थी। और अपने पाठकों को भी वे यही अद्भुत अनुभूति देते हुए उन्हें वर्तमान में जीने के बजाय अतीत-जीवी होने का सुकून और सुविधा देते हैं। यूं तो अक्सर कहानियां स्मृति की होती हैं पर निर्मल वर्मा की कहानियां विशुद्ध स्मृतियों की कहानियां हैं। संवाद की कोई स्थिति यहां बन ही नहीं पाती। वे एक ऐसे कथाकार रहे हैं, जिनसे किसी और की तुलना नहीं की जा सकती पर उनके साथ और बाद की सारी पीढ़ियों को अगर खंगाला जाए तो शायद ही ऐसा कोई रचनाकार हो, जिसने उनसे कुछ न लिया हो..। जैसे कि आजादी के पूर्व के लेखकों में पहले प्रेमचंद से, या फिर बाद वालों ने अज्ञेय से.., पर निर्मल वर्मा ने अपने समकालीन या फिर पूर्ववर्ती किसी से कुछ ग्रहण किया ऐसा नहीं कहा जा सकता। हालांकि बड़बोले लेखकों की तरह उन्होंने अपनी मौलिकता और अप्रभाविकता का दंभ कभी नहीं भरा स्वाभाविक सहृदयता और विनम्रता के साथ अपनी कहानियों की इतनी अच्छी पहचान और विवेचना की दृष्टि कितने लेखकों के पास होती है। यह भी तो यह कह पाने का साहस कितने लोग कर सकते हैं! निर्मल जी की रचनाओं में एक अनाम अव्यक्त दुख को पकड़ने की कोशिश थी, इसीलिए जिसे लोग उनकी कहानी की संवादहीनता कहते हैं, दरअसल वह संवादहीनता न होकर खुद से किया गया संवाद था।अपनी खोज में निरंतर भटकते व्यक्ति की खुद ही से की गई बातचीत है।

कई लोग उन्हें अज्ञेय की रचनाशीलता के निकट कहते हैं पर यह सामंजस्यता भी दोनों के पाश्चात्य साहित्य से अच्छी तरह परिचित होने भर से ही है। वरना अज्ञेय वर्तमान के कथाकार ठहरे और निर्मल अतीत के। इनकी भाषा अलग है, बिम्ब अलग। एक अपने समय के यथार्थ से जूझता है और दूसरा निर्मम पलों के एकाकीपन, असहायता और उदासी से। अतीत के वर्णित दुख की यह छांव ही निर्मल को सबसे अधिक मौलिक बनाती है।

वर्मा स्वयं प्रतिनिधि रूप में नवशिक्षित युवकों के प्रतीक है। हमारा हर युवा पश्चिमी जीवन, सभ्यता, पश्चिमी भौतिकवाद के चकाचौंध से चुम्बकीय ढंग से यूरोप और अमेरिका की तरफ भागता या आकर्षित होता रहा पर प्रत्यक्ष उन देशों पर पहुँचने पर अति बौद्धिकता, अति आधुनिकता, संवेदनाशून्य जीवन शैली और अति उन्मुक्तता से वह पहली बार परेशान हुए। यह उस पर पहला सांस्कृतिक रियेक्शन था। निर्मल वर्मा जैसे आधुनिक मेधा सम्पन्न, संवेदनशील लेखक भारतीय और पाश्चात्य चिन्तन से बँधा था। वह काल-समय के साथ अपने काल के ठीक था पर नए पुरानी विचारधाराओं के बीच संघर्ष करता हुआ आधुनिक मानव केवल वेदान्त और शुद्धाद्वैतवाद और मधुर भक्ति में जी नहीं सकता।

स्वतंत्र भारत की आरंभिक आधी से अधिक सदी निर्मल वर्मा की लेखकीय उपस्थिति से गरिमांकित रही। अपने लेखन में उन्होंने न केवल मनुष्य के दूसरे मनुष्यों के साथ संबंधों की चीर-फाड़ की, वरन् उसकी सामाजिक, राजनैतिक भूमिका क्या हो, तेजी से बदलते जाते हमारे आधुनिक समय में एक प्राचीन संस्कृति के वाहक के रूप में उसके आदर्शों की पीठिका क्या हो, इन सब प्रश्नों का भी सामना किया। उनके समकालीनों और बाद के रचनाकारों में शायद ही कोई ऐसा हो जिसने निर्मल वर्मा से कुछ न लिया हो, पर खुद उनके ऊपर किसी लेखक की छाप खोजना बहुत मुश्किल है।

साहित्यकार निर्मल वर्मा को पढ़ना ऐसे है मानो आपने उन्हें अपनी उंगली थमा दी है, जिसे पकड़कर वह आपको संवेदनाओं की सुदूर, गहराती दुनिया में लिए चले जा रहे हैं। न तो उंगली छुड़ा पाना आसान, न भाग कर लौट पाना। लेकिन कौन तो मूरख होगा जो निर्मल की लेखनी के दर्द और सुख के खूबसूरत मायाजाल से बाहर निकलना चाहेगा, उंगली झटककर लौटना चाहेगा!

निर्मल वर्मा जी ने कहानी लेखन को बहुत गंभीरता से लिया और अपनी एक सी हस्तकला तैयार की। उनकी कहानियां एक खास बनावट लिए रहती है। निर्मल वर्मा हिन्दी साहित्य के ऐसे चितेरे हैं जिन्हें जिन्होंने भी पढ़ा, वे उनमें डूबते उतराते रहे। उनकी कहानियां, उनके उपन्यास अपनी अनेकानेक पंक्तियों में जैसे कविता गढ़ते लगते हैं। भावनाओं को कलात्मकता से प्रतिबिंबित करने वाले निर्मल वर्मा माहौल, संबंध और प्रेम को अपने मूल रूप में जैसे उकेरते गए, वह साहित्य और लेखन को नई ऊंचाइयों पर ले गए निर्मल वर्मा की कहानियां अक्सर अधूरी लगती हैं, जिसके अंत का अनुमान वह पाठकों पर छोड़ दिया करते थे। निर्मल वर्मा जी ने मुख्यतः अपने कथा -साहित्य में अध्यात्म मूल्य को सर्वोत्तपरि स्थान दिया है। वे हिन्दी के चिन्तनपरक लेखकों में से एक थे जो भारतीय संस्कृति, सभ्यता और उसकी विरासत से जुड़े हुए थे। हिन्दी के महत्त्वपूर्ण लेखकों में से एक थे जिन्होंने हिन्दी लेखन का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया।

निर्मल वर्मा ने हिंदी साहित्य को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में स्थापित किया। उनकी रचनाएँ मानव जीवन के सार्वभौमिक सवालों और अनुभवों को छूती हैं। वे न केवल हिंदी साहित्य के महान कथाकार हैं, बल्कि वैश्विक साहित्य के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर भी हैं। उनका लेखन आज भी पाठकों को जीवन और अस्तित्व के गहरे सवालों पर सोचने के लिए प्रेरित करता है।

****

संदर्भ :-
1.निर्मल वर्मा, मेरी प्रिय कहानियाँ, संस्करण, 2014 के आवरण पृष्ठ पर उल्लिखित।